साप्ताहिक
जागत गांव हमार
पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक
RNI-MPHIN/2015/72544
चौपाल से भोपाल तक
भोपाल, सोमवार, 20-26 नवंबर 2023 वर्ष-9, अंक-32
भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित
पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

रिपोर्टः 2018 में जीते 192 विधायक फिर मैदान में, जिनकी आय दोगुनी से ज्यादा बढ़ी, 12 ने आय का प्रमुख स्रोत बताया खेती

पांच साल में एमएसपी में 40 फीसदी तक की वृद्धि, लेकिन मध्यप्रदेश के खेतिहर नेताओं की संपत्ति 1100% तक बढ़ी

मप्र में किसान से ज्यादा मंत्री विधायकों के खेत उपजाऊ!

भोपाल। जागत गांव हमार

मंत्री-विधायकों के खेत शायद ज्यादा उपजाऊ है। पांच साल में किसानों की आमदनी भले डेढ़ गुनी भी न हुई हो, लेकिन खुद को खेतिहर बताने वाले विधायकों की संपत्ति 11 गुना तक बढ़ गई है। दरअसल, प्रदेश में 2018 में जीतने वाले 192 विधायक फिर से चुनाव मैदान में हैं। बीते पांच साल में जिन 18 विधायकों की संपत्ति दोगुनी से ज्यादा बढ़ी है, उनमें से 12 ने अपनी या अपनों की आय का प्रमुख स्रोत खेती बताया है। वहीं पांच साल में फसलों के समर्थन मूल्य में 40 फीसदी तक का ही इजाफा हुआ है। इधर, केंद्र सरकार के आंकड़ों के मुताबिक 2014-15 में जौ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1100 रुपए हुआ करता था, जो 2024-25 के लिए 1850 रुपए कर दिया गया है।

गेहूं का समर्थन मूल्य 2014-15 में 1400 रुपए हुआ करता था, जो कि अगले साल के लिए 2275 रुपए कर दिया गया है। चने का समर्थन मूल्य 2014-15 में 3100 रुपए था, जो अब 5440 रुपए कर दिया गया है। मसूर का समर्थन मूल्य 2014-15 में 2950 रुपए था, जो 2024-25 में 6425 रुपए कर दिया गया है। सरसों का समर्थन मूल्य 2014-15 में 3050 रुपए था, जो कि अगले साल से 5660 रुपए कर दिया गया है। सनफ्लावर का समर्थन मूल्य 2014-15 में 3000 रुपए हुआ करता था, जो साल 2024 के लिए 5800 रुपए कर दिया गया है।

जिनकी संपत्ति ज्यादा बढ़ी, उन्होंने खेती से आय बताई

विधायक	पार्टी	2023 में संपत्ति	2018 में संपत्ति	वृद्धि
लक्ष्मण सिंह	कांग्रेस	42 करोड़ +	12 करोड़ +	239 फीसदी
गिरीश गौतम	भाजपा	9 करोड़ +	2 करोड़	212 फीसदी
अरविंद भदौरिया	भाजपा	5 करोड़ +	76 लाख+	602 फीसदी
रामबाई	बसपा	5 करोड़ +	96 लाख+	440 फीसदी
नारायण सिंह	कांग्रेस	3 करोड़+	76 लाख+	348 फीसदी
महेश परमार	कांग्रेस	2.6 करोड़+	85 लाख+	208 फीसदी
सोहनलाल	कांग्रेस	2.5 करोड़ +	82 लाख+	211 फीसदी

पांच साल में ऐसे बढ़ा प्रमुख फसलों का समर्थन मूल्य

फसल	एमएसपी 2018-19	एमएसपी 2023-24	वृद्धि (फीसदी)
धान	1750	2183	24.74
ज्वार	2430	3180	30.86
मक्का	1700	2090	22.94
तुअर	5675	7000	23.34
सोयाबीन	3399	4600	35.33
मूंगफली	4890	6377	30.40
गेहूं	1840	2275	23.64
चना	4620	5440	17.75
मसूर	4475	6225	39.10

प्रदेश में दिहाड़ी मजदूरी केरल से तीन गुना कम

मध्यप्रदेश में खाद्यान्न उत्पादन 13.5% बढ़ा

इधर, देश में एक वर्ष में खाद्यान्न उत्पादन 4.7 फीसदी बढ़ा है। 2021-22 में 3,15,615 हजार टन के मुकाबले 2022-23 में 3,30,534 हजार टन पैदावार हुई। हालांकि बिहार, गुजरात, हिमाचल व झारखंड में उत्पादन में कमी दर्ज की गई। झारखंड में कमी सबसे ज्यादा 40 फीसदी रही। दूसरी तरफ, मप्र (13.5 फीसदी), पंजाब (6.6 फीसदी), राजस्थान (8.1 फीसदी) और महाराष्ट्र (3.5 फीसदी) में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा है। यह जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक की सालाना हैंडबुक के ताजा अंक में दी गई है।

मजदूरी देने में केरल आगे

केरल के निर्माण मजदूरों की दिहाड़ी सबसे ज्यादा है। वहां निर्माण कार्य में लगे मजदूर को रोज औसत 852 रुपए मिलते हैं। दूसरे नंबर पर तमिलनाडु है, जहां रोज 500 रुपए मिलते हैं। उत्तर भारत के राज्यों में यह राशि एक तिहाई ही है। जैसे मध्य प्रदेश में दिहाड़ी मजदूरी सबसे कम रोज 278 रुपए है। वहीं गुजरात में 323 रुपए, महाराष्ट्र में 371 रुपए, राजस्थान में 393 रुपए, यूपी में 352 रुपए और बिहार में 342 रुपए है। खेतिहर मजदूरों की औसत दैनिक आय भी केरल में सबसे अधिक 764 रुपए रोजाना है। यह मध्य प्रदेश में सबसे कम 229 रुपए रोज है। केरल में 2021-22 की तुलना में निर्माण मजदूरों की दिहाड़ी में रोज 15 रुपए का इजाफा हुआ है जबकि मध्यप्रदेश में 12 रुपए ही बढ़ी है। राजस्थान के निर्माण मजदूरों की दिहाड़ी राष्ट्रीय औसत के बराबर है। वहीं 11 राज्यों के मजदूरों की दैनिक आय राष्ट्रीय औसत से कम है।

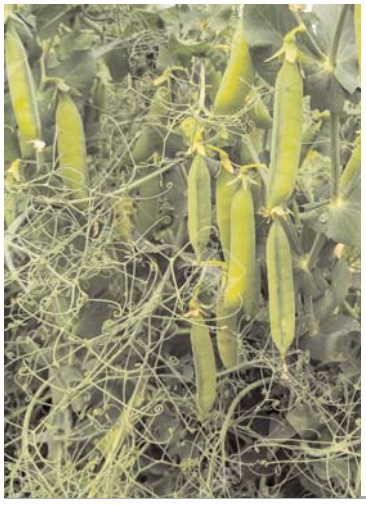

उत्तर प्रदेश निकाल आगेः देश के पांच राज्यों में 85 फीसदी हो रही पैदावार

मटर उत्पादन में दूसरे पायदान पर मध्यप्रदेश

भोपाल। जागत गांव हमार

मटर देश की शीतकालीन सब्जियों में एक है। दलहनी सब्जियों में मटर का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। मटर का सबसे अधिक उत्पादन देश के पांच राज्यों में होता है। भारत में सबसे अधिक मटर का उत्पादन यूपी में होता है। यानी मटर उत्पादन के मामले में ये राज्य अव्वल है। यहां के किसान हर साल बंपर मटर का उत्पादन करते हैं। देश के कुल मटर उत्पादन में यूपी का 48.33 फीसदी की हिस्सेदारी है। यहां की मिट्टी और जलवायु मटर की खेती के लिए बेहतर मानी जाती है। मटर की खेती से जहां एक ओर कम समय में अधिक पैदावार मिलती है, तो वहीं ये खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में भी मददगार होती है। इसलिए मध्य प्रदेश के किसान बड़े पैमाने पर इसकी खेती करते हैं। इसी वजह से उत्पादन के मामले में दूसरे स्थान पर मध्य प्रदेश है। देश के कुल मटर उत्पादन में इस राज्य की हिस्सेदारी 15.67 फीसदी है। यह स्वास्थ्य के लिए भी काफी फायदेमंद होता है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाई जाती है। मटर पोषक तत्वों से भरपूर सब्जी है।

तीसरे नंबर पर पंजाब

मटर का उपयोग सब्जी के साथ-साथ दलहन के रूप में भी किया जाता है। वहीं उत्पादन के मामले में भारत के टॉप तीन राज्यों में तीसरा नंबर पंजाब का है। यहां मटर का 8.22 फीसदी उत्पादन होता है। अब यहां भी मटर का रकबा बढ़ रहा है।

पांचवें स्थान पर हिमाचल

मटर उत्पादन में झारखंड चौथे स्थान पर है। यहां 6.28 फीसदी मटर का उत्पादन हो रहा है। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार मटर के पैदावार में पांचवें स्थान पर हिमाचल प्रदेश है। यहां के किसान हर साल 5.79 फीसदी मटर का उत्पादन करते हैं। वहीं ये पांच राज्य मिलकर 85 फीसदी मटर का उत्पादन करते हैं।

धीरे-धीरे पराली के दाम बढ़ेंगे और पराली के लिए अच्छा बाजार मिलेगा

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा-पराली जलाने की समस्या होगी दूर

पराली से बायो सीएनजी, बायो बिटुमेन और जैविक खाद जैसे प्रोडक्ट बनेंगे

भोपाल। जागत गांव हमार

आज कल पराली चर्चा में है। हालांकि चर्चा किसी अच्छाई के लिए नहीं है, बल्कि पराली आज पर्यावरण का दुश्मन घोषित हो गई है। पराली यानी कि धान की कटनी के बाद बचा फसल अवशेष जिसे ठूंठ भी कहते हैं। उस पराली को खेत से साफ करना होता है ताकि नई फसल लगाई जा सके। अब इसे साफ करने का दो तरीका है। या तो उसे मशीन से बेलर या गांठ बनाकर हटा दें या फिर आग लगा दें। किसानों के लिए पराली में आग लगाना बहुत आसान काम है क्योंकि उन्हें बेलर मशीनें नहीं मिलतीं। यही वजह है कि पराली जलाने की घटनाएं बढ़ रही हैं। इस समस्या को रोकने के लिए केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने एक प्लानिंग दी है। प्लानिंग के मुताबिक आने वाले समय में पराली को आग के हवाले करने की मजबूरी खत्म हो जाएगी और किसान इस पराली को बेचकर अच्छी कमाई कर सकेंगे। गडकरी ने कहा कि पराली से बिटुमेन, बायो-सीएनजी, एलएनजी बनाई जा रही है। सीएनजी और एलएनजी के उत्पादन के लिए हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश में 185 परियोजनाएं शुरू की गई हैं। इथेनॉल, बायो-बिटुमेन और पानीपत में एविएशन फ्यूल का उत्पादन हो रहा है।

तेजी लाने की कोशिश..ताकि लोगों का न घुटे दम

गडकरी ने कहा, सरकार इसमें तेजी लाने की कोशिश कर रही है। धीरे-धीरे पराली के दाम बढ़ेंगे और पराली के लिए अच्छा बाजार मिलेगा और पराली जलाने की समस्या भी हल हो जाएगी। जब मैं पंजाब में था, मैंने उन्हें सुझाव दिया कि एक नीति बनाई जानी चाहिए और इसे (पराली को) कचरा से पैसा में बदलने के लिए किसानों को इसमें शामिल किया जाना चाहिए।

पराली से बायो सीएनजी

पराली से बायो सीएनजी बनाने का काम पहले से जारी है और इससे किसानों को फायदा हो रहा है। बायो सीएनजी बनाने में पराली के साथ पुआल का भी इस्तेमाल होता है। इससे धान के अवशेष का निपटारा आसानी से होता है और पर्यावरण को भी कोई नुकसान नहीं होता। किसान अपनी पराली को बायो सीएनजी कंपनियों को बेचकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। हरियाणा में यह प्रोजेक्ट पहले से चल रहा है और इसे पंजाब में भी लाने पर विचार किया जा रहा है।

रोजगार भी बढ़ेगा पराली से जैविक खाद भी तैयार हो सकती है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने जैविक खाद को मंजूरी दे दी है जिससे केमिकल खादों और कीटनाशकों की मांग में कमी आएगी। पराली से अगर जैविक खाद बनाने का काम तेज हो जाए तो यह पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी यूपी में किसानों की आय बढ़ा सकती है। इससे रोजगार भी बढ़ेगा और सरकार को टैक्स के रूप में कमाई बढ़ सकती है।

बिटुमेन से बनेंगी सड़क

नितिन गडकरी इसी कड़ी में पराली से बायो बिटुमेन बनाने की प्लानिंग भी दे चुके हैं। पराली से बिटुमेन बनाने की टेक्नोलॉजी जल्द आएगी जिसका इस्तेमाल सड़क बनाने में किया जाएगा। इसी आधार पर गडकरी देश के किसानों को अन्नदाता के साथ ही ऊर्जादाता भी बताते रहे हैं। पराली से बायो बिटुमेन बनाने के अलावा उससे इथेनॉल भी बनाया जाएगा। इथेनॉल बनाने का काम शुरू भी हो चुका है। बिटुमेन एक तरह का तारकोल है जो कि एक तरल पदार्थ है और अब तक यह पेट्रोलियम पदार्थ से बनाया जाता रहा है, लेकिन अब इसे पराली से बनाया जाएगा। फिर उस बिटुमेन का उपयोग सड़क बनाने में किया जाएगा।

मक्का का दाना भी अन्य वर्षों की तुलना में इस बार बारीक

आंधी से आड़ी हुई फसल, मक्का उत्पादन कम

» दाने का आकार भी छोटा, भाव पर असर पड़ने की आशंका

» थैली मक्का लगाने के बाद उत्पादन मात्र 20 क्विंटल के हुआ

देवास। जागत गांव हमार

वर्षा काल के दौरान कई बार तेज आंधी चलने से क्षेत्र में बड़ी संख्या में किसानों की मक्का फसल आड़ी पड़ गई थी। इसका असर उत्पादन पर भी पड़ा है। इस वर्ष मक्का का उत्पादन 30 से 50 प्रतिशत ही हो पाया है। बावड़ीखेड़ा निवासी लालसिंह भाई ने बताया कि गत वर्ष मैंने चार थैली मक्का वजन 16 किलो मेरे खेत में बोई थी जिसका उत्पादन लगभग 45-50 क्विंटल हो गया था इस वर्ष 4 थैली मक्का बोई परंतु वर्षा की अधिकता हवा, आंधी के कारण मक्का की फसल आड़ी पड़ गई

थी, मात्र 20 क्विंटल के लगभग मक्का निकल पाई है। मक्का का दाना भी अन्य वर्षों की तुलना में इस बार बारीक है। रूपसिंह ने बताया कि मैंने गत वर्ष 8 थैली मक्का की बोवनी की थी जिसमें लगभग 60 क्विंटल उत्पादन हुआ था परंतु इस वर्ष 8 थैली मक्का लगाने के बाद उत्पादन मात्र 20 क्विंटल के लगभग ही हुआ है, मक्का दाना बारीक है। लाल सिंह ने बताया कि मेरा एक खेत गांव के समीप है वहां पर 2 वर्ष पूर्व गांव में सड़क निर्माण का कार्य हुआ था ढलान एक तरफ होने रहने से इस खेत में जल जमाव हो जाता है। चार थैली मक्का बोने के बाद भी उस खेत में 1 किलो भी उत्पादन नहीं हो पाया मेरे समीप एक किसान बाबू पुत्र शंकर हैं उनकी डेढ़ बीघा जमीन भी बरसात में वर्षा का जल जो गांव से आता है हम दोनों के खेतों में भर जाता है उसकी भी उस खेत में फसल का उत्पादन नहीं हो पाता है। हमने शासन, प्रशासन को कई बार अवगत कराया परंतु ना तो उन्होंने ध्यान दिया न ही सड़क बनाने वाले ने गंभीरता दिखाई। वह तो गनीमत है कि हमारे परिवार के सदस्य खेती के अलावा मजदूरी कर लेते हैं नहीं तो जीवन-यापन ही मुश्किल हो जाता।

-एक्सपोर्ट बढ़ाएगी केंद्र सरकार, अब नहीं होगा घाटा

नीदरलैंड केले का निर्यात शुरू होने से दाम में वृद्धि होगी

केला उत्पादक किसानों की आय में वृद्धि का बड़ा प्लान तैयार

भोपाल। जागत गांव हमार

केंद्र सरकार ने अनुमान लगाया है कि भारत अगले पांच वर्षों में 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के केले का निर्यात करने में सक्षम हो सकता है। इससे 25,000 से अधिक किसानों की आय में वृद्धि होगी। एपिडा ताजे फलों के निर्यात की संभावनाओं को बढ़ा रहा है। इसके लिए नीदरलैंड को आईएनआई फार्म्स द्वारा समुद्री मार्ग से ताजे केलों की पहली परीक्षण खेप के निर्यात की सुविधा प्रदान की है। नीदरलैंड के लिए केले के एक कंटेनर की पहली निर्यात खेप को हाल ही में 2023 को महाराष्ट्र के बारामती से झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यूरोप में केले की परीक्षण खेप एपिडा से रजिस्टर्ड आईएनआई फार्म्स द्वारा किया गया था, जो भारत से फलों और सब्जियों का एक शीर्ष निर्यातक है और उनकी उपज दुनिया भर के 35 से अधिक देशों में निर्यात की जा रही है। एपिडा ने केले की परीक्षण खेप के लिए तकनीकी सहायता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केंद्रीय उपोष्णकटिबंधीय बागवानी संस्थान, लखनऊ से ली है। जबकि आईएनआई फार्म्स ने यूरोप में मार्केटिंग और वितरण के लिए डेल मोंटे और लॉजिस्टिक्स के लिए मेर्स्क के साथ साझेदारी की है। पिछले दो वर्षों में, फर्म ने यूरोपीय बाजार के कड़े मानकों को पूरा करने के लिए केले की गुणवत्ता और सेल्फ लाइफ को बढ़ाने के लिए व्यापक प्रयास किए हैं। आईएनआई फार्म्स ने एग्रोस्टार समूह के हिस्से के रूप में किसानों के साथ सीधे काम करके केले के लिए एक वैल्यू चेन भी स्थापित की है।

केला निर्यात में सिर्फ 1 फीसदी हिस्सा

विश्व का सबसे बड़ा केला उत्पादक देश होने के बावजूद, वैश्विक बाजार में भारत का केले के निर्यात का हिस्सा वर्तमान में केवल एक प्रतिशत ही है। भले ही विश्व के 35.36 मिलियन मीट्रिक टन केले के उत्पादन में देश की हिस्सेदारी 26.45 प्रतिशत है। भारत ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में, 176 मिलियन अमरीकी डॉलर के केले का निर्यात किया, जिसकी मात्रा 0.36 मिलियन मीट्रिक टन के बराबर है। यूरोपीय बाजार में पहली परीक्षण खेप के साथ, यह अनुमान लगाया गया है कि भारत अगले पांच वर्षों में एक अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक मूल्य के केले का निर्यात करने में सक्षम हो सकता है। इससे 25,000 से अधिक किसानों की आय में वृद्धि हो सकती है और आपूर्ति श्रृंखला में 10,000 से अधिक लोगों के लिए प्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण आजीविका का सृजन हो सकता है और अप्रत्यक्ष रूप से खेतों में 50,000 से अधिक लोगों को रोजगार मिल सकता है।

केले के दाम में होगी वृद्धि

एपिडा के अध्यक्ष अभिषेक देव ने कहा कि नीदरलैंड को केले का निर्यात शुरू होने से केले के दाम में वृद्धि होगी। किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी। यह परीक्षण खेप भारतीय केले के लिए यूरोपीय बाजार की महत्वपूर्ण निर्यात क्षमता में वृद्धि करेगा। केले की पहली परीक्षण खेप के निर्यात से गुणवत्ता वाले फलों के निर्यात को सुविधित करके भारतीय निर्यातकों और यूरोपीय संघ के आयातकों के बीच क्षमता निर्माण में मदद मिलेगी।

यहां एक्सपोर्ट

भारतीय केले के प्रमुख निर्यात स्थलों में ईरान, इराक, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, उज्बेकिस्तान, सऊदी अरब, नेपाल, कतर, कुवैत, बहरीन, अफगानिस्तान और मालदीव शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, जापान, जर्मनी, चीन, नीदरलैंड, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे देशों में अच्छा अवसर है।

भारत में केला उत्पादक राज्य

भारत पिछले 15 वर्षों से मध्य पूर्व के साथ केले के व्यापार में बड़ी भूमिका निभा रहा है। इसलिए अनुमान है कि वित्तीय वर्ष 2024 में केले का निर्यात 303 मिलियन अमरीकी डालर से अधिक हो जाएगा। केला आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र, गुजरात, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश राज्यों में उगाई जाने वाली एक प्रमुख बागवानी फसल है। आंध्र प्रदेश सबसे बड़ा केला उत्पादक राज्य है, इसके बाद महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश हैं। ये पांच राज्य वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत के केला उत्पादन में सामूहिक रूप से लगभग 67 प्रतिशत का योगदान देते हैं। अन्य राज्य जो केले का उत्पादन करते हैं, उनमें गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मिजोरम और त्रिपुरा शामिल हैं।

रूफ टाप सोलर पैनल्स नेट मीटर लगाने वालों की संख्या साढ़े दस हजार के करीब

मालवा-निमाड़ क्षेत्र में 10 हजार 400 स्थानों पर सूरज की किरणों से बिजली उत्पादन

हरियाली संरक्षण के साथ ही ग्रीन एनर्जी के लिए शहर व अंचल के लोगों में रुचि बढ़ती जा रही है। बिजली वितरण कंपनी के मालवा-निमाड़ क्षेत्र में 10 हजार 400 स्थानों पर सूरज की किरणों से बिजली उत्पादन हो रहा है। यह मप्र में सबसे ज्यादा भी है।

रतलाम। जागत गांव हमार

रूफ टाप सोलर पैनल्स नेट मीटर योजना के माध्यम से अपने घर, परिसर, दुकान, कारखाने, कार्यालय की छत पर सोलर पैनल्स लगाकर बिजली बनाने वालों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इंदौर शहर और आसपास में कुल 92 मेगावाट क्षमता की पैनल्स आमजन के परिसरों, शासकीय परिसरों आदि में लगाई गई हैं। मालवा और निमाड़ अंचल में कुल 10 हजार 400 स्थानों पर लगे रूफ टाप सोलर नेट मीटरों से संबंधित पैनल्स की कुल क्षमता 133 मेगावाट के करीब पहुंच गई हैं। यह ग्रीन एनर्जी के प्रति लोगों के समर्पित भावना का प्रतीक भी है।

कुल 9350 स्थानों पर बिजली

मालवा क्षेत्र में कुल 9350 स्थानों पर इस तरह बिजली उत्पादन हो रहा है, वहीं निमाड़ के चारों जिलों 1050 स्थानों पर रूफ टाप सोलर नेट मीटर कार्यरत है। निम्न दाब उपभोक्ताओं की बात की जाए तो बिजली कंपनी के करीब 10000 उपभोक्ता इस तरह की एनर्जी में रुचि दिखा रहे हैं, वहीं 405 के करीब उच्चदाब उपभोक्ता भी अपने परिसर, भवन आदि पर रूफ टाप सोलर नेट मीटर के माध्यम से एनर्जी जनरेट कर रहे हैं।

बिजली कंपनी में टाप फाइव जिले

इंदौर शहर-आसपास	6250 स्थान
उज्जैन जिला	1320 स्थान
रतलाम जिला	450 स्थान
खरगोन जिला	345 स्थान
धार जिला	299 स्थान

200 फीट से 10 हजार फीट तक

बिजली कंपनी क्षेत्र में मौजूदा उपभोक्ता 200 वर्ग फीट में अपनी छत पर भी रूफ टाप सोलर नेट मीटर के माध्यम से बिजली उत्पादन योजना से जुड़े है। वहीं जहां 10 हजार वर्गफीट के स्थान है, वहां भी बिजली तैयार की जा रही है। ये स्थान औद्योगिक क्षेत्र, स्कूल, कालेज, स्टेशन, एयरपोर्ट आदि हैं।

रूफ टाप सोलर नेट मीटर के तहत ग्रीन एनर्जी बढ़ाने और कार्बन उत्सर्जन कम करने में इंदौर क्षेत्र के आम लोगों का उत्साह प्रशंसनीय है। इस तरह प्राकृतिक रूप से बिजली बनाने से न केवल बिल कम हो रहा है, बल्कि हरियाली संरक्षण को भी बढ़ावा मिल रहा है। इंदौर स्मार्ट सिटी के उपभोक्ता। इस दिशा में सबसे ज्यादा रुचि दिखा रहे हैं।

- अमित तोमर, एमडी, मप्रपक्षेविविकं इंदौर

मुर्गी पालन में बायो-सेक्योरिटी के अच्छे प्रबंधन से बीमारियों की रोकथाम

डॉ. शैलेष कुमार गुप्ता, सहायक प्राध्यापक
पशुधन उत्पादन प्रबंधन, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसन्धान केंद्र, कुनकुरी जशपुर, छतीसगढ़

भारत जैसे विकासशील देश में मुर्गीपालन लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है। पिछले कुछ वर्षों में मुर्गी से प्राप्त उत्पादों की मांग तीव्र गति से बढ़ी है। मुर्गी पालन आज व्यवसायिक रूप ले रहा है। व्यवसायिक मुर्गी उत्पादन करने वाले फार्मों में बीमारी फैलने की सम्भावना ज्यादा रहती है जिससे अत्यधिक हानि होती है। जब बीमारियां विकराल रूप में आती हैं तो लोगों का रोजगार खत्म होने की संभावना रहती है।

मुर्गीपालन में सबसे ज्यादा खतरा बीमारियों से होता है। कई बीमारियां हैं, जिनसे सावधान रहकर मुर्गियों को रोगों से बचाया जा सकता है। मुर्गियों की खतरनाक बीमारियां जैसे- माइकोप्लाज़्मोसिस, एवियन इन्फ्लुएंजा, रानीखेत, मरेक्स, कोक्सीडिओसिस और इन्फेक्सीयस बर्सल बीमारी आदि के कारण आज अत्यधिक हानि हो रही है। बायो-सेक्योरिटी किसी भी फार्म की सफलता व असफलता का निर्धारण करती है। बायो-सेक्योरिटी योजना है जिसमे फार्म में किसी बीमारी के संक्रमण को रोकना है। बायो-सेक्योरिटी नियमों का पालन कर अच्छा उत्पादन कार्य संभव है।

एक पोल्ट्री फार्म में पक्षियों में बीमारियां जंगली पक्षियों, चूहे, फार्म बर्तन, वाहन, भोज्य सामग्री व पानी आदि से फैलती है। एक उत्पादक क्षेत्र से दूसरे उत्पादक क्षेत्र में भी बिमारियों का स्थानांतरण होता है। बायो-सेक्योरिटी के नियमों का सही ढंग से पालन करके पक्षियों में बीमारी फैलने से रोका जा सकता है। इसके लिए निम्न आवश्यक कदम उठाए जाना चाहिए...।

पोल्ट्री फार्म स्थान: पोल्ट्री फार्म का स्थान बाढ़ रहित क्षेत्र में ऊंचे स्थान पर होनी चाहिए। इस स्थान पर सूर्य प्रकाश की अच्छी उपलब्धता हो तथा वायु का संचालन अच्छा हो। एक पोल्ट्री फार्म से दूसरे पोल्ट्री फार्म की दूरी लगभग 500 मीटर होनी चाहिए। फार्म दाना मील हैचरी आदि से दूर होनी चाहिए। फार्म का निर्माण मुख्य मार्ग से थोड़ी दूर करनी चाहिए।

आवास व्यवस्था: फार्म के चारो ओर फेंसिंग अच्छी होनी चाहिए ताकि कुत्ते, बिल्ली, संदिग्ध वयक्ति व जंगली जानवर प्रवेश न कर सकें। फार्म के प्रवेश द्वार पर रोगाणु नाशी घोल युक्त पैर बाथ होना चाहिए जिससे होकर सभी व्यक्ति व वाहन होकर गुजरें। बाह्य व्यक्तियों व वाहन का न्यूनतम प्रवेश होना चाहिए। अति आवश्यक होने पर उनका पूरा रिकार्ड रजिस्टर में अंकित कर प्रवेश देना चाहिए। लोगों को फार्म में ग्लव्स व बूट के साथ प्रवेश देना चाहिए। फार्म के विभिन्न शेड के बीच पर्याप्त दूरी होनी चाहिए। अलग अलग उम्र के पक्षियों के लिए अलग अलग शेड बनानी चाहिए। बायोसेक्युरिटी से सम्बंधित लोगो पुरे फार्म में लगा होना चाहिए। फार्म का फ्यूमिगेशन फार्मेल्डीहाईड द्वारा करनी चाहिए जिसमें दो भाग फार्मेलिन व एक भाग पोटेशियम परमेगनेट होनी चाहिए। 5प्रतिशत क्लोरीन का उपयोग फर्श की सफाई के लिए, आयोडोफोर्स या आयोडीन का उपयोग बर्तन के लिए व फेनोलिक कम्पाउंड से दीवार की पुताई करनी चाहिए।

भोजन-पानी व विष्ठा प्रबंधन: अच्छी गुणवत्ता भोज्य सामग्री परीक्षण के पश्चात देनी चाहिए। भोज्य सामग्री का लम्बे समय तक भंडारण नहीं करनी चाहिए। हमेशा साफ पानी उपयोग करनी चाहिए। पानी में 5 पीपीएम गोली मिलाकर देनी चाहिए। एक पानी के नमूने में बैक्टीरिया संख्या 1000 से कम होनी चाहिए। पानी व भोज्य सामग्री के बर्तनों को अच्छी तरह धोनी चाहिए। पोल्ट्री विष्ठा को अच्छी तरह से जमीं में दबा देनी चाहिए। मृत पक्षियों को तुरंत फार्म से अलग कर देनी चाहिए ताकि संक्रमण न फैल सके। मृत व बीमार पक्षियों का सैम्पल की जाँच अच्छे प्रयोगशाला में करानी चाहिए।

ऑल इन ऑल आउट पद्धति: एक साथ सभी पक्षियों को फार्म में प्रवेश देना चाहिए तथा एक साथ बिक्री कर फार्म को खाली कर देनी चाहिए। कुछ समय बाद फार्म की अच्छी सफाई, रंग रोगन के बाद ही नए पक्षियों को प्रवेश देना चाहिए।

नए पक्षियों का आइसोलेसन: फार्म में नए पक्षियों को लगभग 21 दिवस के लिए आइसोलेसन में रखनी चाहिए। इस अवधि में सैम्पल लेकर रोगों की जांच करनी चाहिए।

टीकाकरण: पक्षियों में संक्रमण को रोकने के लिए समयनुसार टीकाकरण करनी चाहिए। टीकाकरण से पक्षियों में संक्रमण की संभावना कम रहती है। फार्म मे सभी वैक्सीन सही डोज के साथ सही समय पर लगना आवश्यक है।

फार्म रिकार्ड्स रखना: फार्म में सभी कार्यों का फार्म दुरुस्त रखनी चाहिए जैसे- कार्य विभाजन, खर्च आमदनी, टीकाकरण, स्वास्थ्य परीक्षण कार्यक्रम, दवाइयों का रिकार्ड्स आदि। पोल्ट्री फार्म मे बायो-सेक्युरिटी बनाए रखने से बहुत सारी बीमारियों को रोका जा सकता है। अत: हमें फार्म से आर्थिक लाभ लेना है तो फार्म मे काम करने वाले सभी को जागरूक करके बायो- सेक्युरिटी के नियमो और सिद्धांतों का अच्छी तरह से पालन करके कार्य करनी चाहिए।

फसलों में पोषक तत्वों की कमी और प्रभाव

डॉ. राज सिंह कुशवाह
वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, ग्वालियर, मध्यप्रदेश

जिस तरह से व्यक्ति को पोषक तत्वों की जरूरत होती है, वैसे ही पौधों को भी कुछ पोषक तत्वों की जरूरत होती ह, जिनके न मिलने से पौधों की वृद्धि रुक जाती है। कुछ पोषक तत्वों के बिना पौधे की वृद्धि-विकास तथा प्रजनन आदि क्रियाएं सम्भव नहीं हैं। इनमें से मुख्य तत्व कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश है। नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटाश को पौधे अधिक मात्रा में लेते हैं। इसके अलावा कैल्सियम, मैग्नीशियम और सल्फर की जरुरत कम होती है। इन्हें गौण तत्व के रूप मे जाना जाता है। इसके अलावा लोहा, तांबा, जस्ता, मैंग्नीज, बोरान, मालिब्डेनम की पौधों को कम मात्रा में जरूरत होती है।

फसलों अच्छे विकास और अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए कुछ पोषक जरूरी होते हैं, जिनके बिना पौधे की वृद्धि-विकास तथा प्रजनन आदि क्रियाएं सम्भव नहीं हैं। कुछ पोषक तत्वों के बिना पौधे की वृद्धि-विकास तथा प्रजनन आदि क्रियाएं सम्भव नहीं हैं।

बोरान: वर्धनशील भाग के पास की पत्तियों का रंग पीला हो जाता है। कलियां सफेद या हल्के भूरे मृत ऊतक की तरह दिखाई देती है।

बोरॉन के कार्य व कमी के लक्षण: बोरॉन कोशिका-विभाजन एवं कोशिका की वृद्धि को प्रोत्साहित करता है। कार्बोहाइड्रेट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है साथ ही कार्बोहाइड्रेट के स्थानांतरण में योग देता है। चुकन्दर, गाजर, फूलगोभी में इसकी कमी से पौधों का शीर्ष भाग मर जाता है और बगल से कलियाँ निकलने लगती है। फसल में बोरॉन की कमी से उपज बहुत ही कम हो जाती है।

गंधक: पत्तियां, शिराओं सहित, गहरे हरे से पीले रंग में बदल जाती है तथा बाद में सफेद हो जाती है। सबसे पहले नई पत्तियां प्रभावित होती है।

गंधक के कार्य व कमी के लक्षण: यह एमिनों एसिड एवं प्रोटीन संश्लेषण के लिए आवश्यक है। क्लोरोफिल बनाने में मदद करता है। सरसों एवं प्याज परिवार के पौधों में तथा तीसी, सोयाबीन एवं मूंगफली में तेल की मात्रा को बढ़ाता है।

मैगनीज: पत्तियों का रंग पीला-घूसर या लाल घूसर हो जाता है तथा शिराएं हरी होती है। पत्तियों का किनारा और शिराओं का मध्य भाग हरितिमाहीन हो जाता है। हरितिमाहीन पत्तियां अपने स्र्ष्ठु सामान्य आकार में रहती है।

जस्ता: सामान्य तौर पर पत्तियों के शिराओं के मध्य हरितिमाहीन के लक्षण दिखाई देते हैं और पत्तियों का रंग कॉसा की तरह हो जाता है।

जस्ता के कार्य व कमी के लक्षण: जस्ता बहुत से पाचक रसों (एनजाइम्स) में सक्रिय कारक के रूप में भाग लेता है। बहुत से हार्मोन्स के निर्माण में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पौधों के प्रजनन में इसकी भूमिका बड़े महत्व की होती है।

मैग्नीशियम: पत्तियों के अग्रभाग का रंग गहरा हरा होकर शिराओं का मध्य भाग सुनहरा पीला हो जाता है। अंत में किनारे अंदर की ओर लाल-बैंगनी रंग के धब्बे हो जाते हैं।

फास्फोरस: पौधों की पत्तियां फास्फोरस की कमी के कारण छोटी होती है। पौधों का रंग गुलाबी होकर हरा हो जाता है।

फास्फोरस के कार्य व कमी के लक्षण: जड़ प्रणाली का विकास करता है। कोशिका विभाजन में सहायता करता है। फसलों को समय पर पकने में मदद करता है। धान्य फसलों में कल्लों की संख्या को बढ़ाता है जिसके फलस्वरूप बालियों एवं दानों की संख्या बढ़ती है। ऊर्जा रूपांतर, वसा, प्रोटीन एवं कार्बोहाइड्रेट बनाने में योग देता है। दलहनी फसलों की जड़ों की ग्रंथियों में स्थित राइजोबियम बैक्टिरिया की क्रियाशीलता को बढ़ाता है।

कैल्शियम: प्राथमिक पत्तियां पहले प्रभावित होती है तथा देर से निकलती है। शीर्ष कलियां खराब हो जाती है। मक्के की नोकें चिपक जाती है।

कैल्सियम-कमी के लक्षण: नई पत्तियों के किनारों का मुड़ व सिकुड़ जाना। अग्रिम कलिका का सूख जाना। जड़ों का विकास कम तथा जड़ों पर ग्रन्थियों की संख्या में काफी कमी होना। फल व कलियों का अपरिपक्व दशा में मुरझाना।

लोहा: नई पत्तियों में तने के ऊपरी भाग पर सबसे पहले हरितिमाहीन के लक्षण दिखाई देते है। शिराओं को छोड़कर पत्तियों का रंग एक साथ पीला हो जाता है। उक्त कमी होने पर भूरे रंग का धब्बा या मृत ऊतक के लक्षण प्रकट होते हैं।

लोहा-कमी के लक्षण: पत्तियों के किनारों व नसों का अधिक समय तक हरा बना रहना। नई कलिकाओं की मृत्यु को जाना तथा तनों का छोटा रह जाना। धान में कमी से क्लोरोफिल रहित पौधा होना, पैधे की वृद्धि का रुकना।

तांबा: नई पत्तियां एक साथ गहरी पीले रंग की हो जाती है तथा सूख कर गिरने लगती है। खाद्यान्न वाली फसलों में गुच्छों में वृद्धि होती है तथा शीर्ष में दाने नहीं होते हैं।

मालिब्डेनम: नई पत्तियां सूख जाती है, हल्के हरे रंग की जो जाती है मध्य शिराओं को छोड़कर पूरी पत्तियों पर सूखे धब्बे दिखाई देते हैं। नाइट्रोजन के उचित ढंग से उपयोग न होने के कारण पुरानी पत्तियां हरितिमाहीन होने लगती है।

पोटेशियम: पुरानी पत्तियों का रंग पीला/भूरा हो जाता है और बाहरी किनारे कद-फट जाते हैं। मोटे अनाज यथ मक्का एवं ज्वार में ये लक्षण पत्तियों के अग्रभाग से प्रांरभ होते है।

नाइट्रोजन: पौधे हल्के हरे रंग के या हल्के पीले रंग के होकर बौने रह जाते है। पुरानी पत्तियां पहले पीली (हरितिमाहान) हो जाती है। मोटे अनाज दाली फसलों में पत्तियों का पीलापन अग्रभाग से शुरु होकर मध्य शिराओं तक फैल जाता है।

कार्बन डाइऑक्साइड को जमा करने में पत्तियों का महत्व

दुनिया भर के 400 शोधकर्ताओं ने पेड़ों की प्रजातियों को लेकर आंकड़े एकत्र किए हैं। शोधकर्ताओं ने बताया कि, अध्ययन, विभिन्न प्रकार के पेड़ों के बारे में हमारी जानकारी और समझ को बढ़ाता है, हमें पारिस्थितिक तंत्र और कार्बन डाईऑक्साइड चक्र के बारे में निष्कर्ष निकालने में मदद करता है। कार्बन, पानी और पोषक तत्वों की गतिविधि सहित स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में उनकी भूमिका को समझने के लिए विभिन्न प्रकार के पेड़ों को समझना महत्वपूर्ण है। शंकुधारी पत्तियां पानी बचाने में पर्णपाती पत्तियों से अलग होती हैं, लेकिन इससे बायोमास उत्पादकता कम हो जाता है। पर्णपाती पेड़ मौसमी जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल हो गए हैं। वे वहां उग सकते हैं जहां सदाबहार पेड़ नहीं उग सकते, अर्थात् ये पाले या सूखे की आशंका वाले क्षेत्रों में नहीं उग पाते हैं। शोध के हवाले से, बेयरूत विश्वविद्यालय में प्लांट सिस्टमैटिक्स विभाग के डॉ. एंड्रियास हेम्प कहते हैं कि, हालांकि, जंगलों के पत्तेदार प्रकारों को प्रभावित करने वाले कारणों के बारे में हमारा ज्ञान अभी भी सीमित है, इसलिए हम नहीं जानते कि शंकुधारी और पत्तेदार पेड़ों के साथ-साथ सदाबहार और पर्णपाती पेड़ों का अनुपात दुनिया भर में कितना बड़ा है। यह अध्ययन नेचर प्लांट्स जर्नल में प्रकाशित हुआ है। इस कमी को दूर करने के लिए, दुनिया भर के लगभग 400 शोधकर्ताओं ने आंकड़ों को जमा करने में अहम योगदान दिया है। इसके परिणामस्वरूप पत्ती के आकार, पर्णपाती बनाम शंकुधारी और सदाबहार पर अंतरराष्ट्रीय प्लांट ट्रेट डेटाबेस टीआरवाई के रिकॉर्ड के साथ लगभग 10,000 पेड़ों की इन्वेंट्री भूखंडों के आंकड़ों को मिलाने से पेड़ों की पत्ती के प्रकारों में भिन्नता का वैश्विक, जमीन-आधारित मूल्यांकन किया गया है। हेम्प कहते हैं, हमने पाया कि पत्ती की लंबी आयु मुख्य रूप से मौसमी तापमान में अंतर और मिट्टी के गुणों की सीमा पर निर्भर करती है, जबकि पत्ती का आकार मुख्य रूप से तापमान से निर्धारित होता है। पारिस्थितिकी तंत्र में पत्तियों को अपने महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए ये स्थितियां सही होनी चाहिए। पेड़ों की इस सूची के परिणामस्वरूप, शोधकर्ता मानते हैं कि दुनिया भर में वृक्षों में से 38 फीसदी सदाबहार शंकुधारी हैं, 29 फीसदी सदाबहार पर्णपाती वृक्ष हैं, 27 फीसदी पर्णपाती तथा पांच फीसदी पर्णपाती शंकुधारी हैं। इस प्रकार, ये पेड़ों के प्रकार जंगलों में जमीन के ऊपर के बायोमास के क्रमश: 21 फीसदी, 54 फीसदी, 22 फीसदी और तीन फीसदी के अनुरूप हैं, जो कि 18 और 335 गीगाटन के बीच है। शोधकर्ताओं ने कहा इसके अलावा, हम मानते हैं कि, सदी के अंत तक कम से कम 17 से 38 फीसदी तक जंगल आधारित जलवायु परिस्थितियों के संपर्क में आ जाएंगे जो वर्तमान में मौजूद पेड़ों के प्रकार की तुलना में एक अलग प्रकार के वनों का पक्ष लेते हैं, कुछ क्षेत्रों में पेड़ों पर तनाव जो जलवायु में भारी बदलाव को दर्शाता है। पेड़ की पत्तियों के प्रकार और उनके संबंधित बायोमास के वितरण की मात्रा निर्धारित करके और उन क्षेत्रों की पहचान करके जहां जलवायु परिवर्तन वर्तमान पत्ती के प्रकारों पर अधिक दबाव डालेगा। ये निष्कर्ष स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र और कार्बन चक्र के भविष्य के कामकाज के बारे में बेहतर अनुमान लगाने में मदद कर सकते हैं। सीओ2 चक्र वायुमंडल, जीवमंडल और इस प्रकार हमारी जलवायु की स्थिति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सामान्यतः यह ध्यान देना चाहिए कि बकरी की नस्ल उसी जलवायु से हो जहां व्यवसाय शुरू करना है...

अगर किसान बकरी पालन को वैज्ञानिक विधि से करते हैं, तो वह इसे कई गुणा तक अपना लाभ बढ़ा सकते हैं

उन्नत तरीके से व्यवसायिक बकरी पालन किसानों को कर सकता है मालामाल

भोपाल। किसानों के लिए बकरी पालन का व्यवसाय काफी मुनाफे का सौदा होता है। दरअसल, बाजार में बकरी की डिमांड सबसे अधिक इसके मांस व दूध की होती है। आज के ज्यादातर किसान व पशुपालक बकरी पालन परंपरागत तरीकों से कर रहे हैं, जिससे उन्हें बकरियों की उत्पादन क्षमता का लगभग 40-50 प्रतिशत होती है। लेकिन वहीं अगर किसान बकरी पालन को वैज्ञानिक विधि से करते हैं, तो वह इसे कई गुणा तक अपना लाभ बढ़ा सकते हैं। बता दें कि वैज्ञानिक विधि से व्यवसायिक बकरी पालन से उचित लाभ प्राप्त करने के लिए कम से कम 100 बकरियां पाली जाए। केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक, वैज्ञानिक विधि से व्यवसायिक बकरी पालन से किसान 5-6 गुना अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

बकरी की नस्ल का चयन

व्यावसायिक बकरी पालन आरंभ करते समय बकरी की नस्ल का चयन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। बकरी प्रजाति का चयन, बकरी पालन का उद्देश्य, क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, उपलब्ध चारा-दाना बाजार मांग पर निर्भर करता है। सामान्यत: यह ध्यान देना चाहिए कि बकरी की नस्ल उसी जलवायु से हो जहां व्यवसाय शुरू करना है। बकरी पालन के लिए अच्छी नस्ल के प्रजनक बकरे बाहर से लाकर स्थानीय बकरियों से गर्भाधान कर नस्ल सुधार का कार्य किया जा सकता है। प्राय: देखा गया है कि जो बकरी अधिक मेमने देती है, उसके मेमने कम वजन के होते हैं। दूसरी ओर जो बकरी कम मेमने देती है उसके मेमने बड़े तथा अधिक वजन वाले होते हैं। इस प्रकार सभी प्रजातियां लगभग समान लाभ देती हैं।

प्रजनक बकरों का चयन

बकरे के जनक शुद्ध नस्ल के रहे हों तथा स्वयं भी शारीरिक रूप से स्वस्थ हों। बकरा किसी आनुवंशिक रोग से ग्रसित न हो एवं उसका वाहक भी न हो। जनक उच्च प्रजनन क्षमता वाले रहे हों। इनकी सन्तानों में मृत्युदर का स्तर कम रहा हो। जनक में दूध, मांस या रेशे की उत्पादक क्षमता उच्च स्तरीय रही हो। बकरे में पूर्ण रूप से विकसित जननांग हों एवं उसकी प्रजनन क्षमता भी उच्च स्तरीय हो। वह विभिन्न उम्र सोपानों (जन्म, तीन माह, छह माह, नौ माह और बारह माह) पर अधिक भारधारक रहा हो। बकरा देखने में आकर्षक एवं क्षमतावान होना चाहिए।

बकरी पालन के लिए पोषण प्रबंधन

- नवजात बच्चों को पैदा होने के आधे घंटे के अन्दर खीस पिलायेंइ इससे उन्हें जीवन भर रोग प्रतिरोधक क्षमता प्राप्त होती है।
- बच्चों को 15 दिन का होने पर हरा चारा एवं रातब मिश्रण खिलाना आरंभ करें तथा 3 माह का होने पर मां का दूध पिलाना बंद कर दे।
- मांस उत्पादन के लिये नर बच्चों को 3 से 9 माह की उम्र तक शरीर भार का 2-5 से 3प्रतिशत तक समुचित मात्रा में ऊर्जा (मक्का, जौ, गेहूं) एवं प्रोटीन (मूंगफली, अलसी, तिल, बिनौला की खल) अवयव युक्त रातब मिश्रण देवेंद्र इस रातब मिश्रण में ऊर्जा की मात्रा लगभग 60प्रतिशत एवं प्रोटीन युक्त अवयव लगभग 37 प्रतिशत, खनिज मिश्रण 2 प्रतिशत एवं नमक 1 प्रतिशत होना चाहिए।
- वयस्क बकरियों (एक साल से अधिक) एवं प्रजनन के लिये पाले जाने वाले नरों में ऊर्जा युक्त अवयवों की मात्रा लगभग 70 प्रतिशत होनी चाहिए। पोषण में खनिजों एवं लवणों को नियमित रूप से शामिल रखें।
- जिन बकरियों का दूध उत्पादन लगभग 500 मिली/दिन हो उन्हें 250 ग्राम, एक लीटर दूध पर 500 ग्राम रातब मिश्रण दें। इसके उपरान्त प्रति एक लीटर अतिरिक्त दूध पर 500 ग्राम अतिरिक्त रातब मिश्रण दें।
- दूध देने वाली, गर्भवती बकरियों (आखिरी के 2 से 3 माह) एवं बच्चों (3 से 9 माह) को 200 से 350 ग्राम प्रतिदिन रातब मिश्रण दें।
- हरे चारे के साथ सूखा चारा अवश्य दें। अचानक आहार व्यवस्था में बदलाव न करें एवं अधिक मात्रा में हरा चारा न दें।

व्यवसायिक बकरी पालन में ध्यान देने योग्य बातें

- बकरी पालन के लिए अच्छी नस्ल का चुनाव।
- बकरी शुद्ध नस्ल की एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ होनी चाहिए।
- नस्ल के अनुरूप कद काठी व ऊंचाई-लम्बाई अच्छी होनी चाहिए।
- दूध की मात्रा एवं दुग्ध काल अच्छा होना चाहिए।
- बकरी की प्रजनन क्षमता (दो ब्यातों के बीच अंतराल एवं जुड़वा बच्चे पैदा करने की दर) अच्छी हो।

बकरी पालन के लिए आवास प्रबंधन

- पशु गृह में पर्याप्त मात्रा में धूप, हवा एवं खुली जगह हो। सर्दियों में ठंड से एवं बरसात में बौछार से बचाने की व्यवस्था करें पशु गृह को साफ एवं स्वच्छ रखें।
- अल्प आयु मेमनों को सीधे मिट्टी के सम्पर्क में आने से बचने के लिए फर्श पर सूखी घास या पुआल बिछा दें तथा उसे तीसरे दिन बदलते रहें।
- वर्षा ऋतु से पूर्व एवं बाद में फर्श के ऊपरी सतह की 6 इंच मिट्टी बदल दें।
- अल्प आयु मेमनों, गर्भित बकरियों एवं प्रजनक बकरे की अलग आवास व्यवस्था करें।
- एक वयस्क बकरी को 3-4 वर्ग मीटर खुला एवं 1-2 वर्ग मीटर के क्षेत्रफल की आवश्यकता होती है।
- ब्यांत के बाद बकरी तथा उसके मेमनों को एक सप्ताह तक साथ रखें।
- बकरी पालन के लिए स्वास्थ्य प्रबंधन
- वर्षा ऋतु से पहले एवं बाद में (साल में दो बार) कृमि नाशक दवा पिलायें।
- रोग निरोधक टीके (मुख्यत: पीपीआर, ईटी, पॉक्स, एफएम डी इत्यादि) समय से अवश्य लगवाएं।
- बीमार पशुओं को छटनी कर स्वस्थ पशुओं से अलग रखें एवं तुरंत उपचार कराएं।
- आवश्यकतानुसार बाह्य परजीवी के उपचार के लिए ब्यूटाक्स (1 प्रतिशत) के घोल से स्नान कराएं।

एक दिन में देती है 30 लीटर तक दूध

भैंस की मुर्रा नस्ल, डेयरी उद्योग के लिए फायदेमंद

भोपाल। जागत गांव हमार

भारत में खेती और पशुपालन की परंपरा बहुत पुरानी है। यहां किसान खेती और पशुपालन करके अधिक आय प्राप्त कर सकते है। इसी कारण से नई नस्लों की गायों और भैंसों देश भर में खूब पाला जाता है, ताकि उनके दूध से अच्छा मुनाफा कमाया जा सके। गाय और भैंस की कई प्रजातियां अधिक दूध देती हैं। ये नस्लें डेयरी उद्योग के लिए बहुत उपयोगी हैं। भैंस का दूध गाय के दूध की तुलना में अधिक पसंद किया जाता है, क्योंकि ये अधिक गाढ़ा होता है। इसी वजह से ज्यादातर डेयरी संचालक भैंस पालन पसंद करते हैं। ऐसे में अगर आप भी भैंस पालन के जरिए अपना डेयरी बिजनेस शुरू करना चाहते हैं तो भैंस की मुर्रा नस्ल काफी फायदेमंद हो सकती है।

दूध उत्पादन क्षमता के लिए देश भर में प्रसिद्ध- इसे भैंस की उन्त किस्मों में से एक माना जाता है, जो अपनी दूध उत्पादन क्षमता के लिए देश भर में प्रसिद्ध है। यही वजह है कि देश में बड़ी संख्या में पशुपालक इस भैंस का पलान करते हैंद्य जिससे उन्हें अच्छा मुनाफा होता है। भैंस की इस नस्ल की उत्पत्ति भारत के हरियाणा और पंजाब राज्य से हुई है। जहां इसे भिवानी, हिसार, रोहतक, जिंद, झझर, फतेहाबाद और गुड़गांव जैसे जिलों में पाला जाता है। इसके अलावा देश की राजधानी दिल्ली के क्षेत्रों में भी इसका खूब पालन किया जाता है। इसी तरह इसका उपयोग इटली, बुल्गारिया और मिस्र जैसे अन्य देशों में डेयरी भैंस के दूध उत्पादन में सुधार के लिए किया गया है।

एक दिन में दे सकती है 20 से 30 लीटर तक दूध

भैंस की ये नस्ल काफी ऊंचे दामों पर बिकती है। अगर इसकी कीमत की बात करें तो एक मुर्रा भैंस की कीमत 50 हजार रुपए से लेकर 2 लाख रुपए तक होती है। अब आप सोच रहे होंगे की एक भैंस के 2 लाख रुपए कुछ ज्यादा नहीं है। लेकिन, अगर आप इसके दूध देने की क्षमता पर ध्यान दें तो आपको इसकी ज्यादा कीमत का कारण सीधा नजर आ जाएगा। मुर्रा भैंस की गर्भावधि करीब 310 दिन की होती है। अगर इसकी अच्छी देखभाल की जाए तो ये भैंस हर दिन 20 से 30 लीटर तक दूध दे सकती है।

मुर्रा नस्ल की पहचान और विशेषताएं

- यह विश्व की सबसे अच्छी भैंस की दुधारू नस्ल है।
- वैसे तो यह भैंस भारत के सभी क्षेत्रों में पाई जाती है। लेकिन, ज्यादातर इसका पालन दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में किया जाता है।
- भैंस की इस नस्ल के सींग जलेबी की तरह घुमावदार होते हैं।
- रंग की बात करें तो भैंस की इस नस्ल का रंग काला होता है।
- मुर्रा भैंस का सिर छोटा और पूंछ लंबी होती हैद्य साथ ही इसका पिछला हिस्सा सुविकसित होता है।
- इस भैंस का सिर, पूंछ और पैर पर सुनहरे रंग के बाल भी मिलते हैं।
- मुर्रा भैंस की गर्भावधि करीब 310 दिन की होती है। ये भैंस हर दिन में 20 से 30 लीटर तक दूध दे सकती है।

सोवा की खेती खोल सकती है किसानों के समृद्धि के द्वार

भारत में तेजी से बढ़ रही है हरे सोवा की मांग खेती से किसानों को हो रहा मोटा मुनाफा

भोपाल। जागत गांव हमार

सोवा एक औषधीय पौधा है, जिसका इस्तेमाल सब्जी, सलाद और दवाई बनाने में किया जाता है। इस मौसम में यह बाजार में आसानी से यह मिल जाता है. सोया सौंफ की तरह ही दिखने वाला एक पौधा है। वर्तमान समय में इसकी खेती का रकबा बढ़ता जा रहा है। समय के साथ इसकी मांग में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। हालांकि अभी यह होटल, रेस्टोरेंट और बड़े शहरों में ही इस्तेमाल हो रहा है। लेकिन बदलते जीवन शैली ने किसानों के लिए मुनाफे के द्वार खोल दिए हैं। ऐसे में अगर किसान चाहें तो गैर परंपरागत सब्जी उगाकर मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। शुरुआत में किसान सोवा के साथ अन्य सह फसली सब्जियां उगा सकते हैं। इस पौधे के पत्ते, टहनियों और बीजों में तेज सुगंध होती है। बीज से निकलने वाले तेल का उपयोग दवा बनाने में किया जाता है। देखने में इसके पत्ते सौंफ जैसे लगते हैं। इसके बीज से निकलने वाले वाष्पशील तेल का प्रयोग ग्राइव वाटर बनाने में किया जाता है। सोया की 100 ग्राम पत्ती में 7 ग्राम पानी, 20 ग्राम प्रोटीन, 4 ग्राम वसा, 44 ग्राम कार्बोहाइड्रेट्स, 12 ग्राम रेशा और 60 मिली ग्राम एस्कोर्बिक एसिड पाया जाता है।

सोवा की खेती से जुड़ी जरूरी बातें

इसकी पैदावार अच्छी मिले, इसके लिए उस क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण होनी चाहिए। इसका मतलब हुआ कि तापमान न ज्यादा हो और न ही कम। इसे पहाड़ी क्षेत्रों में खरीफ सीजन में और उत्तर भारत में शरद ऋतु में उगाया जाता है। सोया की खेती हल्की बलुई मिट्टी को छोड़कर हर तरह की जलनिकासी वाली मिट्टी में की जा सकती है। इसकी बोवनी मध्य सितंबर से मध्य अक्टूबर के बीच की जाती है। वहीं बीजों की मात्रा और दूरी पर बात की जाए तो 4 किलो बीज प्रति हेक्टेयर सिंचित क्षेत्र के लिए पर्याप्त होता है। वहीं असिंचित क्षेत्र के लिए प्रति हेक्टेयर 5 किलो बीज की जरूरत होती है। रोपाई के समय कतार से कतार की दूरी 30 से 40 सेंटी मीटर और पौध से पौध की दूरी 20 से 30 सेंटी मीटर रखनी चाहिए। सोवा की फसल को तीन से चार सिंचाई की जरूरत पड़ती है। बेहतर देखभाल और खर-पतवार प्रबंधन करने से बेहतर उत्पादन प्राप्त होता है। बोवनी से 30 से 40 दिन बाद किसान फसल की पहली कटाई कर सकते हैं। सबसे अच्छी बात है कि सोया की खेती के साथ ही किसान अन्य सब्जियों की खेती भी कर सकते हैं। इससे उनकी आमदनी के कई स्रोत हो जाएंगे और उन्हें लाभ मिलेगा।

बोवनी का सही समय| यह रबी सीजन में बोई जाती है। सुवा की बुवाई का सही समय अक्टूबर-नवंबर है।

बीजदर| प्रति बीघा इसका ढाई किलोग्राम बीज लगता है। बुवाई से पहले बीज को कार्बेण्डाजिम या थीरम से उपचारित कर लें।

खाद एवं उर्वरक| इसकी अच्छी पैदावार के लिए प्रति बीघा 10 टन गोबर की खाद डालें। नाइट्रोजन और फॉस्फोरस 30-30 किलो की मात्रा में लें। बोवनी के समय फॉस्फोरस और नाइट्रोजन की आधी मात्रा दें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा बराबर भागों में 30 से 60 दिन बाद दें।

कैसे करें बोवनी| सुवा की बुवाई छिटकवा विधि से की जाती है। बोवनी के समय मिट्टी में नमी होनी चाहिए। इसकी अच्छी पैदावार के लिए 2 से 3 सिंचाई की जरूरत पड़ती है।

प्रमुख रोग| वैसे तो सुवा की फसल में बीमारियां बेहद कम लगती है लेकिन इसमें छाछिया रोग का प्रकोप होता है। इसकी रोकथाम के लिए गंधकचुर्ण का भुरकाव प्रति बीघा 4 किलो किया जाता है। वहीं कभी मोयला नामक कीट फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। मोयला से बचाव के लिए डाइमिथोएट 30 ईसी का छिड़काव किया जाता है।

उपज| इससे प्रति हेक्टेयर 18 क्विंटल की पैदावार होती है। जो सामान्यतः 7 से 8 हजार रूपए प्रति क्विंटल बिकता है। इस तरह एक हेक्टेयर से 1 लाख रुपए का मुनाफा हो जाता है।

कीमतों में अगले साल तेजी आने की संभावना

मप्र के मिर्च उत्पादक किसानों की अब होगी बंपर कमाई

भोपाल। जागत गांव हमार

लाल मिर्च की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। लाल मिर्च की कीमतों में अगले साल तेजी आने की संभावना है। ऐसे में लाल मिर्च उगाने वाले किसानों को मार्केट में बंपर रेट मिलेगा। दरअसल, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय (टीएनएयू) ने कहा है कि अगले साल जनवरी- फरवरी महीने के दौरान सन्नम किस्म की लाल मिर्च की कीमतों में बंपर बढ़ोतरी हो सकती है। इस किस्म का रेट बढ़ कर 200 से 210 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच सकता है।

ऐसे में किसानों को अच्छी इनकम होगी। खास बात यह है कि पिछले साल सन्नम किस्म की कीमत 175-180 रुपये प्रति किलो थी। तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर के कृषि और ग्रामीण विकास अध्ययन केंद्र ने किसानों को सन्नम किस्म की लाल मिर्च की बुवाई करने की सलाह दी है। हालांकि, उत्तर-पूर्वी मानसून और अन्य उत्पादक राज्यों से तमिलनाडु में सन्नम किस्म की लाल मिर्च की सप्लाई बढ़ने पर कीमतों में बदलाव भी हो सकता है। खास बात यह है कि मूल्य पूर्वानुमान टीम ने तिरुनेलवेली विनियमित बाजार के पिछले 15 साल के आंकड़ों का विश्लेषण करने के बाद सन्नम किस्म कीमतों को लेकर ये भविष्यवाणी की है।

19.58 लाख टन होगा लाल मिर्च का उत्पादन

लाल मिर्च एक महत्वपूर्ण मसाला है। इसके बगैर हम टेस्टी सब्जी की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। लगभग पूरे भारत में इसकी खेती की जाती है। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के मुताबिक, फसल सीजन 2022-23 के दौरान पूरे देश में करीब 8.52 लाख हेक्टेयर में किसानों ने लाल मिर्च की खेती की है। इससे 19.58 लाख टन लाल मिर्च का उत्पादन होने का अनुमान है। ऐसे आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, गुजरात और तमिलनाडु लाल मिर्च के मुख्य उत्पादक राज्य हैं। ये मिलकर देश में उत्पादिक लाल मिर्च में 93 प्रतिशत का योगदान देते हैं।

0.49 लाख हेक्टेयर में लाल मिर्च की बुवाई

ऐसे तमिलनाडु के प्रमुख मिर्च उत्पादक जिलों में मिर्च की बुआई अक्टूबर महीने के दौरान की जाती है। यहां पर इसकी खेती एकल फसल के रूप में की जाती है। इसलिए, व्यापारी साल भर की मांग को पूरा करने के लिए कटाई की अवधि के दौरान अपना स्टॉक जमा करते हैं। साल 2022-23 के दौरान तमिलनाडु में 0.49 लाख हेक्टेयर में लाल मिर्च की बुवाई की गई थी, जिससे 0.22 लाख टन सूखी लाल मिर्च का उत्पादन हुआ। मुंडू और सन्नम तमिलनाडु में उगाई जाने वाली मिर्च की प्रमुख किस्में हैं।

कम समय में अधिक मुनाफे के लिए मटर की पांच उन्नत किस्म

भोपाल। जागत गांव हमार

मटर की खेती कम समय में किसानों को अधिक मुनाफा दिला सकती है। इसके लिए जरूरी हैं कि किसान उन्नत किस्मों का चयन करें। किसानों के लिए मटर की टॉप पांच उन्नत किस्में-काशी नंदनी, काशी उदय, काशी अगेती, काशी मुक्ति और अर्केल मटर किस्म हैं। मटर की ये सभी किस्में 50 से 60 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं। साथ ही ये किस्में प्रति हेक्टेयर 40-45 क्विंटल तक उपज देती हैं। मटर की ये सभी किस्में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा तैयार की गई हैं।

मटर की पांच किस्में

काशी नंदनी- मटर की काशी नंदनी किस्म जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, झारखंड और कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल के राज्य के किसानों के लिए काफी बेहतर मानी जाती है। यह किस्म वाराणसी के काशी नंदिनी भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के द्वारा विकसित की गई है। इस किस्म के पौधे 45-50 सेमी लंबे होते हैं। मटर की यह किस्म 60 से 65 दिन में पककर तैयार हो जाती है। किसान इस किस्म से 5 से 6 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त कर सकते हैं।

काशी उदय- मटर के काशी उदय किस्म के पौधे पूरी तरह से हरे रंग के होते हैं। मटर की यह किस्म किसान को प्रति एकड़ 35 से 40 क्विंटल तक पैदावार देने में सक्षम है। मटर की इस किस्म की खासियत यह है कि किसान इसे एक नहीं, बल्कि दो से तीन बार की अच्छी तुड़ाई कर सकते हैं।

काशी मुक्ति किस्म- इस किस्म की मटर खाने में काफी अधिक मीठी होती है, जिसके चलते बाजार में इसकी मांग सबसे अधिक होती हैय लेकिन मटर की काशी मुक्ति किस्म देर से पककर तैयार होती है। इस किस्म से किसान प्रति एकड़ 50 कुंतल उपज प्राप्त कर सकते हैं।

काशी अगेती किस्म - मटर की यह किस्म भी खाने में काफी अधिक मीठी होती है। इस किस्म के मटर का औसत वजन 9-10 ग्राम होता है। खेत में यह किस्म 55-60 दिन में पककर तैयार हो जाती है। किसान काशी अगेती किस्म से प्रति एकड़ 40-45 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त कर सकते है।

पूरे देश में की जा सकती है इसकी खेती

कम से कम समय में अच्छा किसानों को फायदा दे सकती हैं मेथी की उन्नत किस्म

भोपाल। मेथी एक तरह की पत्तेदार वाली फसल है, जिसकी खेती देश के लगभग सभी किसान अपने खेत में करके अच्छी मोटी कमाई कर रहे हैं। दरअसल, मेथी हमारे शरीर के लिए काफी फायदेमंद होती है। क्योंकि इसमें प्रोटीन, सूक्ष्म तत्त्व विटामिन पाए जाते हैं। इसलिए बाजार में इसकी मांग सबसे अधिक होती है। ऐसे में अगर आप मेथी की उन्नत किस्मों की खेती करते हैं, तो आप कम समय में भी अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। मेथी की ये टॉप पांच उन्नत किस्में पूसा कसूरी, आरएसटी 305, राजेंद्र क्रांति, एएफजी 2 और हिसार सोनाली किस्म हैं, जो प्रति एकड़ में लगभग 6 क्विंटल तक पैदावार देने में सक्षम हैं। मेथी की जिन पांच उन्नत किस्मों की हम बात कर रहे हैं, उनसे कई तरह के सौंदर्य प्रसाधन भी तैयार किए जाते हैं, जिसके चलते इनके दाम बाजार में किसान को काफी अच्छे मिल जाते हैं।

मेथी की टॉप पांच उन्नत किस्म

पूसा कसूरी- मेथी की पूसा कसूरी किस्म में फूल काफी देर से आते हैं। किसान इस किस्म की एक बार बुवाई करने के बाद करीब 5-6 बाद उपज प्राप्त कर सकते हैं। मेथी की इस किस्म के दाने छोटे आकार के होते है। किसान पूसा कसूरी से प्रति एकड़ 2.5 से 2.8 क्विंटल उपज प्राप्त कर सकते है।

आरएमटी 305- मेथी की यह किस्म काफी जल्दी पककर तैयार हो जाती है। मेथी की आरएमटी 305 किस्म में चूर्णिल फफूंद रोग एवं मूल गांठ सूत्रकृमि रोग नहीं लगते हैं। किसान इस किस्म से प्रति एकड़ करीब 5.2 से 6 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

एएफजी 2 - मेथी की इस किस्म के पते काफी चौड़े होते हैं। किसान मेथी की एएफजी 2 किस्म की एक बार बुवाई करने के बाद करीब 3 बार कटाई कर उपज प्राप्त कर सकते हैं। इस किस्म के दाने छोटे आकार में होते हैं। किसान मेथी की इस किस्म से प्रति एकड़ 7.2 से 8 क्विंटल उत्पादन ले सकते हैं।

राजेंद्र क्रांति किस्म- मेथी की राजेंद्र क्रांति किस्म से किसान प्रति एकड़ लगभग 5 क्विंटल तक बढ़िया उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। मेथी यह किस्म खेत में लगभग 120 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश, बिहार-गुजरात उत्पादक राज्य

सावधान! हानिकारक कीटों से रहें सजग वरना सरसों में हो जाएगा बड़ा नुकसान

भोपाल। जागत गांव हमार

खाद्य तेलों की आयात निर्भरता को कम करने के लिए तिलहन की खेती को सरकार प्रोत्साहित कर रही है रबी सीजन की प्रमुख तिलहनी फसल सरसों और राई या राई, पीली व भूरी सरसों, तोरिया, सरसों, अफ्रीकन सरसों व तारामीरा सरसों की खेती बड़े पैमाने पर होती है। हमारे देश की तिलहन अर्थव्यवस्था में मुख्य भूमिका निभाती है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश बिहार व गुजरात में होती है। पिछले साल सरसों का बोआई रकबा 1.10 करोड़ हेक्टेयर पहुंच गया था। आशा है इस बार भी चालू रबी सीजन में बड़े पैमाने पर सरसों, तोरिया, राई की खेती किसानों ने की है। लेकिन इस फसल की उपज को घटाने में इसमें लगने वाले हानिकारक कीट हैं।

आईसीएआर का एनआईपीएएम अनुसंधान संस्थान के कृषि वैज्ञानिकों के अुनसार माहू सरसों का सबसे हानिकारक कीट है माहू या चेपा,और एफिड नाम से जाना जाता है।यह कीट आकार में छोटी और मुलायम होती है। यह सफेद और हरे रंग की होती है। इस कीट की खासियत यह है कि कीट के प्रौढ़ और शिशु पौधों के फूलों, पत्तियों, डंठलों और फलियों पर चिपक कर रस चूसकर पौधों को कमजोर कर देता है। इसका प्रकोप दिसम्बर महीने के अंतिम सप्ताह में शुरू होता है। जब फसल में फूल बनना शुरू होता है और यह मार्च तक बना रहता है। इस कीट के प्रौढ़ और शिशु समूह में रहकर पौध के विभिन्न भाग के रस चूसती हैं,जिससे पौधे पीले बदरंग और कमजोर हो जाते हैं। फलियों की संख्या कम होती है और दाने छोटे रहते हैं। यह कीट मधु जैसा पदार्थ भी स्रावित करती है। जिससे बाद में पौधे पर काला फफूंद लग जाता है। इसके कारण पौधों की प्रकाश संश्लेषण क्रिया प्रभावित होती है। बादलों वाले मौसम और कम तापमान में यह कीट तेजी से फैलता है,इस कीट से फसल को 25 से 40 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है।

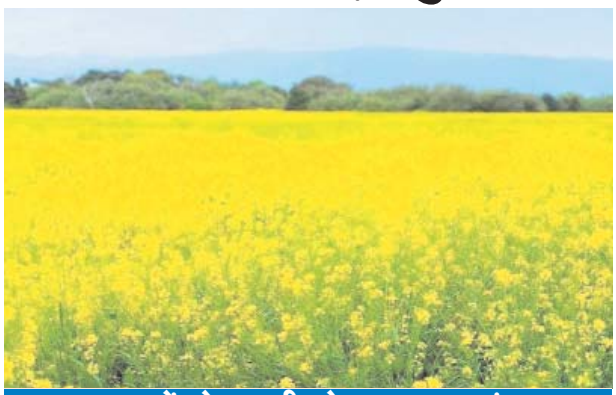

सरसों को माहू कीट से इस तरह बचाएं

कृषि वैज्ञानिक के अनुसार अगर सरसों की फसल की बोआई 20 अक्टूबर से पहले कर ली जाती है, तो सरसों में माहू कीट का प्रकोप कम होता है। अगर सरसों की फसल पर माहू कीट का प्रकोप अधिक होता है, तो इसके नियंत्रण के लिए स्टिकी ट्रैप एक पतली चिपचिपी सीट होती है जो बिना रसायनों के फसलों की सुरक्षा करती है। इस सीट पर चिपचिपा पदार्थ लगाकर और उचाई से 1 से 2 फीट ऊपर रखकर माहू कीट को पीले रंग की ओर आकर्षित किया जाता है, जिससे कीट चिपक कर मर जाता है। इसलिए, इसके नियंत्रण के लिए 10 से 15 स्टिकीट्रैप प्रति एकड़ के हिसाब से खेतों में लगाए जाते हैं। पौध सुरक्षा विशेषज्ञ के अनुसार अगर रासायनिक दवाओं से नियंत्रण करना है जब कीट का प्रकोप हो गया है, तो रासायनिक कीटनाशक थायामिथोक्सम 25 डब्ल्यूजी का एक ग्राम प्रति 10 लीटर पानी की दर से आधारित छिड़काव करें या डाइमिथोएट या 1 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी की दर मिलाकर सरसों को छिड़काव करें। इस तरह,माहू कीट पर नियंत्रण किया जा सकता है।

सरसों का चितकबरा कीट

सरसों का हानिकारक कीट, पेन्टेड बग (चितकबरा कीट), सरसों की फसल को काफी नुकसान पहुंचाता है। इसकी आमतौर पर पत्तियों और तनों पर एकत्र होता है।इस कीट के शिशु और प्रौध दोनों ही पत्तियों, फूलों, तनों, और फलियों का रस चूसते हैं, और अधिक प्रकोप होने पर पौधों की बढ़वार रूक जाती है। इस कीट का रंगरंग चमकीला काला तथा शरीर में नारंगी या भूरे रंग के धब्बे होते हैं। यह कीट फसल को दोबार हानि पहुंचाता है,पहला अक्टूबर-नवम्बर जब फसल बढ़वार की अवस्था पर होती है और दूसरा मार्च-अप्रैल में जब फसल पकने की अवस्था होती है।अधिकआ मण से पौधे मर भी जाते हैं। फसल पकने के समय इस कीट के प्रकोप होने से तेल की मात्रा और दानों के वजन में कमी हो जाती है।

इस कीट से बचने के उपाय

चितकबरा कीट के रोकथाम के लिए, जिन्हें झटका देकर नीचे गिराकर केरोसिन युक्त पानी में डालकर मारा जा सकता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए फसल पर मैलाथियान 50 ईसी 1000 मिली या डाइमेथोएट 30 ईसी 625 मिली को 600-700 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

आरा मक्खी चट कर जाती है फसल

सरसों की फसल में हानि पहुंचाने वाली आरा मक्खी को इंग्लिश में सॉ फ्लाई कहा जाता है। इस कीट के लार्वा काले और भूरे रंग के होते हैं, और वे पत्तियों के किनारों या पत्तियों के बीच में रहते हैं। ये सरसों की पत्तियों को टेढ़े-मेढ़े तरीके से खाती हैं और उसमें छेद कर देती हैं। फील्ड में आरा मक्खी के प्रकोप से, गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पूरा पौधा की पत्तियों को खाकर खत्म कर देती है और पौधा पता विहीन हो जाता है।

इस कीट पर ऐसे करें नियंत्रण

आरा मक्खी के नियंत्रण के लिए अंकुर अवस्था में सिंचाई करना बहुत फायदेमंद होता है, क्योंकि अधिकांश लार्वा डूबने के कारण मर जाते हैं।सुबह और शाम को आरी मक्खी के ग्रबों को एकत्र करना और नष्ट करना, करेले के बीज के तेल के इमल्शन का एंटीफीडेंट के रूप में उपयोग करना चाहिए , इस कीट के प्रकोप होने पर फसल पर मैलाथियान 50 ईसी 400 मिली/एकड़ या क्विनोलफोस 25 ईसी 250 मिली दवा को 200 से 250 लीटर पानी में प्रति एकड़ हिसाब छिड़काव से करना चाहिए। इस तरह से, आरा मक्खी के प्रकोप को समाप्त कर सकते हैं।

ग्लोबल फिशरीज कांफ्रेंस से एक्सपोर्ट ही नहीं घरेलू बाजार में भी मिलेगी रफ्तार

नई दिल्ली। जागत गांव हमार

मछली ही नहीं भारत में होने वाले वेनामी झींगा को भी विदेशों में बहुत पसंद किया जाता है। सीफूड एक्सपोर्ट में एक बड़ी मात्रा झींगा की होती है। झींगा और मछली पालन को कैसे लाभदायक बनाया जाए। कैसे एक्सपोर्ट और घरेलू बाजार में इन्हें रफ्तार मिले, मछली और झींगा पालन करने वालों की इनकम कैसे बढ़े, इसी को ध्यान में रखते हुए ग्लोबल फिशरीज कांफ्रेंस-2023 का आयोजन किया जा रहा है। देश में ये पहला मौका होगा जब फिशरीज से जुड़े किसी कार्यक्रम को इंटरनेशनल लेवल पर कराया जा रहा है। गौरतलब है कि 21 नवंबर को दुनियाभर में वर्ल्ड फिशरीज डे मनाया जाता है। इसीलिए कांफ्रेंस का दिन 21 नवंबर को चुना गया है। अहमदाबाद, गुजरात में इसका आयोजन किया जा रहा है। ये दो दिन चलेगी। इसमे फिशरीज से जुड़ी प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया है। दुनियाभर के 50 से ज्यादा देशों से फिश एक्सपर्ट इस कांफ्रेंस में हिस्सा लेंगे। मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री परषोत्तम रूपाला इसका उद्घाटन करेंगे।

फिश सेक्टर से जुड़े हर एक को जोड़ेगी ये कांफ्रेंस

केन्द्रीय मत्स्यिक, पशुपालन एवं डेयरी राज्यमंत्री डॉ. एल मुरुगन ने कहा कि ये कांफ्रेंस मछुआरों, किसानों, इंडस्ट्री , तटीय समुदायों, एक्सपोर्टर, अनुसंधान संस्थान, निवेशकों आदि को एक मंच प्रदान करेगा। ये एक मंच पर सभी को साथ जोड़ने का काम करेगी। उन्होंने ये भी कहा कि सम्मेलन में मछली पालन क्षेत्र से जुड़ी सागर परिक्रमा, पीएमएमएसवाई, मछली पालन बुनियादी ढांचे आदि में किए गए विकास और सरकारी पहलों का भी प्रदर्शन किया जाएगा।

220 लाख टन रखा गया है मछली उत्पादन का लक्ष्य

केन्द्रीय मंत्री परषोत्तम रूपाला का कहना है कि फिशरीज सेक्टर एक उभरता हुआ क्षेत्र है। विश्व मछली उत्पादन में आठ फीसद की हिस्सेदारी के साथ भारत दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि उत्पादक देश है। इतना ही नहीं झींगा उत्पादन में दूसरा और सीफूड एक्सपोर्ट में चौथे नंबर पर है। लेकिन अब हमारा लक्ष्य पीएम नरेन्द्र मोदी की पीएम मत्स्य संपदा योजना के तहत 22 मिलियन मीट्रिक टन मछली उत्पादन का है। वहीं साल 2024-25 में सीफूड एक्सपोर्ट एक लाख करोड़ तक पहुंचाने के लिए भी लगातार काम चल रहा है। उन्होंने कहा कि ये वो सेक्टर है जो समाज के कमजोर वर्ग के आर्थिक सशक्तिकरण में मददगार साबित होगा और विकास की असीम संभावनाएं हैं। और इसे हासिल करने के लिए हमारी नजर लक्ष्य पर है।

सुपर सीडर धान की कटाई के तुरंत बाद गेहूं की बोवनी करने के लिए सबसे उपयोगी कृषि उपकरण

इस एक मशीन से किसानों के श्रम, समय और पैसे की होगी बचत

भोपाल। सुपर सीडर मशीन से किसानों को धान की कटाई के बाद खेत में फैले धान के अवशेषों को जलाने की आवश्यकता नहीं होती है। क्योंकि यह मशीन धान की पराली जमीन में ही कुतरकर बिजाई कर देती है और अगली फसल के लिए खेत को तैयार कर देती है। इस प्रक्रिया से खेत की मिट्टी की गुणवत्ता में भी सुधार होता है और साथ ही खाद व उर्वरक का भी खर्च कम होता है। इसके अलावा इससे श्रम, समय और पैसे की भी बचत होती हैद्य बता दें कि सुपर सीडर धान की कटाई के तुरंत बाद गेहूं की बुआई करने के लिए सबसे उपयोगी कृषि उपकरण मानी जाती है। यह कृषि मशीन पराली को खेतों से बिना निकाले गेहूं की सीधी बुवाई करने में किसानों की काफी मदद करता है।

इस मशीन से किसान खेत में बीज को सरलता से बो सकते है

- इस मशीन में जेएलएफ टाइप के ब्लेड दिए गए हैं, जो मृदा और अवशेषों को प्रभावी ढंग से मिलाने में मदद करते हैं।
- किसान इस मशीन से एक बार की जुताई में ही फसल की बुवाई कर सकते हैं।
- इस मशीन से पराली की हरित खाद बनाई जाती है, जिससे खेत में कार्बन तत्व बढ़ जाता है और फसल का अच्छे से विकास होता है।
- इससे बुवाई की लागत करीब 50 प्रतिशत तक कम होती हैं।
- सुपर सीडर मशीन से बुवाई करने से सिंचाई के पानी की बचत होती है और साथ ही खेतों में खरपतवार भी कम होती है।

सुपर सीडर मशीन से पराली की समस्या का हाल

सुपर सीडर से पराली की समस्या से निजात पाने के लिए वरदान की तरह काम करता है। किसान इस मशीन का इस्तेमाल धान, गन्ना, मक्का आदि फसलों की जड़ों और ठूंठ को हटाने के लिए आसानी से कर सकते हैं। यह कृषि मशीन बुवाई करने पर कम समय एवं व्यय के साथ-साथ अधिक उत्पादन एवं पर्यावरण प्रदूषण में कमी और जल का संचयन भी आसानी से किया जा सकता है। सुपर सीडर मशीन सबसे कुशल और विश्वसनीय कृषि यंत्र है। यह कृषि उत्पादकता बढ़ाने में काफी मदद करती हैद्य यह किफायती कुशल और उच्च कृषि उपज में मदद करती है।

सुपर सीडर मशीन के लाभ

- यह एक बहुउद्देशीय कृषि यंत्र है, जो गेहूं, सोयाबीन या फिर घास के विभिन्न प्रकार के बीजों को लगाने में मदद करती है।
- यह मशीन चावल के भूसे को काटने और उठाने में भी मदद करती है।
- इस मशीन को खेत में चलाना और संभावना काफी आसान है।
- यह उपकरण कल्टीवेशन, मल्चिंग, बुवाई और उर्वरक को फैलाने के कार्यों को एक साथ पूरा कर सकती है।
- यह मशीन पराली को जलाने से रोकने और पर्यावरण की रक्षा करने का सबसे अच्छा साधन है।
- यह एक मशीन खेत से गन्ना, धान, मक्का और केला आदि फसलों की जड़ों व ठूंठों को खेत में ही नष्ट कर देती है।

फसलों का उत्पादन बढ़ाने में काफी मददगार साबित हो होगी

सूर्य से प्राप्त ऊर्जा का उचित उपयोग कर पौधे को मजबूत और बनाता है स्वस्थ

इफको सागरिका समुद्री शैवाल से बना खाद उत्पादन बढ़ाने में मददगार

समुद्री शैवाल का कमाल! किसानों के लिए वरदान इफको सागरिका खाद

भोपाल। जागत गांव हमार

खेती-किसानी को ज्यादा प्रॉफिटेबल बनाने और लागत कम करने के लिए सरकार और एग्री कंपनियां लगातार कोशिश कर रही हैं। इस कड़ी में, कोऑपरेटिव सोसायटी इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर्स कोऑपरेटिव लिमिटेड ने समुद्री शैलाव से बना बायो-फर्टिलाइजर सागरिका निकाला है, जिससे उत्पादन और मिट्टी की गुणवत्ता दोनों के लिए फायदेमंद है। इफको सागरिका एक जैव उत्तेजक है जो आपकी फसल को विपरीत परिस्थितियों में सुरक्षित रखता है। इसका इस्तेमाल सभी तरह की फसल पर कर सकते हैं। समुद्री शैवाल खाद, समुद्री शैवाल से निकाला जाता है। इसमें सभी प्रकार के प्रोटीन, एमिनो एसिड में समृद्ध है जो पौधे सीधे अवशोषित और उपयोग कर सकते हैं, और पौधे विकास नियामकों, अल्जीनिक एसिड, विटामिन, न्यूक्लियोटाइड, पौधे तनाव प्रतिरोध कारकों और पौधों के विकास के आवश्यक तत्वों को पौधे शारीरिक प्रक्रियाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

सभी जैव सक्रिय पदार्थ समुद्री शैवाल से निकाले गए शुद्ध प्राकृतिक पदार्थ होते हैं, कोई अवशेष प्रभाव नहीं होता है। ये खाद धीरे धीरे मिट्टी में पोषक तत्व छोड़ता रहता है जिससे लंबे समय तक पौधे को न्यूट्रीशन मिलता रहता है। इसमें पौधे की बढ़त के लिए जरूरी उत्प्रेरक हार्मोन होते हैं, जोकि सूर्य से प्राप्त ऊर्जा का उचित उपयोग करके पौधे को मजबूत व स्वस्थ बनाता है।

खाद के फायदे

सीवीड खाद से पौधे स्वस्थ, रोगमुक्त और मौसम की मार से सुरक्षित रहते हैं। खाद धीरे-धीरे मिट्टी में पोषक तत्व छोड़ती रहती है। जिससे लंबे समय तक पौधे को पोषण मिलता रहता है। इसमें पौधे की बढ़त के लिए जरूरी उत्प्रेरक हार्मोन होते हैं जो कि सूर्य से प्राप्त ऊर्जा का उचित उपयोग करके मजबूत व स्वस्थ पौधा बनाते हैं। समुद्री शैवाल के अर्क का उपयोग पर्ण छिड़काव, मिट्टी में लगाने और बुवाई से पहले बीज उपचार करने के लिए किया जाता है। यह खाद फसल की गुणवत्ता को बढ़ाती है। इस खाद को लॉन, किचन गार्डन, घर में लगे पौधों में भी डाला जा सकता है।

समुद्री शैवाल खाद

इफको सागरिका समुद्री शैवाल से बना खाद है, जो फसलों का उत्पादन बढ़ाने में मददगार है। इसे लाल और भूरे रंग के समुद्री जल में उगने वाले शैवाल से बनाया गया है। इसलिए इसका नाम सागरिका रखा गया है। इसमें कुल घुलनशील पदार्थों में 28 फीसदी समुद्री शैवाल का रस (लाल और भूरे रंग का शैवाल), प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, अकार्बनिक लवण, विटामिन, प्राकृतिक हार्मोंज, बिटेंज, मैनीटोल और अन्य पोषक तत्व।

इनके लिए फायदेमंद

सीवीड खाद में फॉसफोरस की उपयुक्त मात्रा पाई जाती है। जिससे बड़े और अच्छे रंग के फूल और स्वस्थ फल पैदा होते हैं। सीवीड खाद फल-फूल के पौधे जैसे आलू, स्त्रीरा, स्ट्रॉबेरी, शिमला मिर्च, सेब, भिंडी, संतरा, ग्लेडियोलस के फूल आदि में अच्छी पैदावार करता है।

फसलों के लिए उपयोगी

इफको की वेबसाइट पर दी गई जानकारी के मुताबिक, इफको सागरिका सभी फसलों जैसे- दलहन, तिलहन, प्लांटेशन (अर्कानट, नारियल, कॉफी, रबड़, चाय, कोको), कमर्शियल क्रॉप (कॉट, जूट, गन्ना आदि) और हॉर्टिकल्चर (केला, सेब, अमरूद, आम, पपीता आदि) में इस्तेमाल किया जा सकता है।

सीवीड खाद कैसे डालें

पौधे में डालने के लिए पत्तियों पर सीवीड खाद का छिड़काव करना सबसे अच्छा तरीका माना गया है। इसे पानी में मिलाकर बीज बोते समय, कलम या पौधा लगाते समय डालें या छिड़काव करें। पौधे में फल-फूल का सीजन आने से 8-10 दिन पहले या कलियां दिखने पर यह खाद डालना चाहिए। पत्तियों पर छिड़काव के लिए 1 लीटर पानी में करीब 1 से 3 मिलीलीटर सीवीड खाद मिलाकर पौधे की पत्तियों पर छिड़काव करें। पौधे की जड़ों में डालने के लिए 1 लीटर पानी में 3 से 6 मिलीलीटर सीवीड खाद की मात्रा पर्याप्त होती है।

किसानों को कुछ खास बातों का रखना होगा ध्यान

पूसा ने सब्जियों की खेती के लिए जारी की मौसमी एडवाइजरी

भोपाल। जागत गांव हमार

पूसा के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के लिए नई एडवाइजरी जारी की है। इसमें खासतौर पर सब्जियों की खेती को लेकर जानकारी दी गई है। इस मौसम में किसान गाजर की बुवाई कर सकते हैं। बोवनी से पहले मिट्टी में उचित नमी का ध्यान अवश्य रखें। गाजर की पूसा रूधिरा किस्म किसानों के लिए अच्छी रहेगी। बीज दर 2 किलोग्राम प्रति एकड़ रखनी चाहिए, लेकिन अगर इसकी बोवनी मशीन द्वारा की जाती है तो फिर बीज सिर्फ एक किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से लगेगा। जिससे बीज की बचत होगी और उत्पाद की गुणवत्ता भी अच्छी रहेगी। बोवनी से पहले बीज को 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से केप्टान से उपचारित करें। खेत में देसी खाद, पोटाश और फॉस्फोरस उर्वरक अवश्य डालें। इस मौसम में किसान सरसों साग की बोवनी भी कर सकते हैं। इसके लि पूसा साग-1 की बुवाई कर सकते हैं। मूली में जापानी व्हाईट, हिल क्रीन या पूसा मृदुला की बोबनी की जा सकती है। पालक की बोवनी कर रहे हैं तो आल ग्रीन और पूसा भारती का चयन कर सकते हैं। बथुआ में पूसा बथुआ-1 की बोबनी करना उपयुक्त होगा। मेथी में पूसा कसूरी, गांठ गोभी में व्हाईट वियना, पर्पल वियना जबकि धनिया में पंत हरितमा या संकर किस्मों की बुवाई मेड़ों या फिर उथली क्यारियों में कर सकते हैं। इन सब्जी फसलों की बुवाई से पहले मिट्टी में उचित नमी का ध्यान अवश्य रखें।

फूलगोभी के लिए उपयुक्त मौसम

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि यह मौसम ब्रोकली, फूलगोभी तथा बंदगोभी की पौधशाला तैयार करने के लिए उपयुक्त है। पौधशाला भूमि से उठी हुई क्यारियों पर ही बनाएं। जिन किसानों की पौधशाला तैयार है वह मौसम को ध्यान में रखते हुए पौध की रोपाई ऊंची मेड़ों पर करें। तापमान को ध्यान में रखते हुए किसान इस समय लहसुन की बुवाई कर सकते हैं। बोवनी से पहले मिट्टी में उचित नमी का ध्यान अवश्य रखें। इसकी उन्नत किस्में -जी-1, जी-41, जी-50 और जी-282 हैं। खेत में देसी खाद और फास्फोरस उर्वरक अवश्य डालें।

मिर्च की खेती करने वाले दें ध्यान

वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह दी है कि मिर्च तथा टमाटर के खेतों में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में दबा दें। इससे रोग का फैलाव दूसरे पौधों में नहीं होगा। यदि प्रकोप अधिक है तो इमिडाक्लोप्रिड को 0.3 मिली प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। किसान गुलाब के पौधों की कटाई-छटाई करें। कटाई के बाद बाविस्टीन का लेप लगाएं ताकि कवकों का आक्रमण न हो।

मटर की बुवाई में न करें देरी

तापमान को ध्यान में रखते हुए मटर की बोवनी में ओर अधिक देरी न करें अन्यथा फसल की उपज में कमी होगी। कीड़ों का प्रकोप अधिक हो सकता है. बुवाई से पूर्व मिट्टी में उचित नमी का ध्यान अवश्य रखें। इसकी उन्नत किस्में पूसा प्रगति और आर्किल हैं। बीजों को कवकनाशी कैप्टान या थायरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से मिलाकर उपचार करें। उसके बाद फसल विशेष राईजोबियम का टीका अवश्य लगाएं। गुड़ को पानी में उबालकर ठंडा कर लें और राईजोबियम को बीज के साथ मिलाकर उपचारित करके सूखने के लिए किसी छायेदार स्थान में रख दें। फिर अगले दिन बोवनी करें।

लाल चंदन उगाने वालों को मिलेगा बढ़ावा

भोपाल। जागत गांव हमार

लाल चंदन उगाने वाले और व्यापार करने वालों को राहत मिलने के साथ अब बढ़ावा मिलेगा। हाल ही में सीआईटीईएस की स्थायी समिति की बैठक में वन्यजीव और पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण के प्रयासों से भारत को महत्वपूर्ण व्यापार की समीक्षा से हटा दिया गया है। भारत 2004 से लाल चंदन के लिए महत्वपूर्ण व्यापार (आरएसटी) प्रक्रिया की समीक्षा के अधीन था। इसके तहत वैध तरीके से लाल चंदन के व्यापार को भी भारी समीक्षा से गुजरना पड़ता था। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव ने एक्स पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि हाल ही में संपन्न सीआईटीईएस स्थायी समिति की बैठक भारत के वन्यजीव और पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण प्रयासों को बड़ी सफलता मिली है। वन्यजीव अधिनियम में संशोधन के परिणामस्वरूप, भारत को सीआईटीईएस की राष्ट्रीय विधान परियोजना की श्रेणी-1 में कर दिया गया है। भारत 2004 से लाल चंदन के लिए आरएसटी प्रक्रिया के तहत था। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार के प्रयासों से हमारे अनुपालन और रिपोर्टिंग के आधार पर, लाल चंदन को महत्वपूर्ण व्यापार समीक्षा से हटा दिया गया है। उल्लेखनीय है कि लाल चंदन, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की चौथी अनुसूची में संरक्षित प्रजातियों की सूची में शामिल है। लाल चंदन आंध्र प्रदेश के पूर्वी घाट क्षेत्र में जंगलों में उगाया जाता है। इसके समृद्ध रंग व चिकित्सीय गुण सौंदर्य प्रसाधन के कारण इसे औषधीय उत्पादों और उच्च स्तरीय फर्नीचर, लकड़ी के शिल्प में उपयोग में लाया जाता है, जिसकी एशिया, विशेष रूप से चीन में इसकी अधिक मांग है।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)